আল্লাহর প্রতি ঈমান ও তাগুতকে বর্জন

gjt kvCL Ave gnv¤§` Avj-gvKw`mx

c‡Z¨K e¨w³ i GB Ávb _vKv DwPr †h, mg¯ জীব ও জড়ের সূচনা ও কর্তৃত্ব মহান আল্লাহর। সালাত, যাকাত বা অন্যান্য ইবাদতের পূর্বে যে দৃঢ় ব্যাপার মহান আল্লাহ আদম (আঃ) এর সন¯vb‡`i Av‡`k K‡i‡Qb Zv nj Avjvহ তা'য়ালা একত্ববাদের প্রতি ঈমান Avbqb Kiv Ges Ab¨ mg¯ উপাস্যগুলোকে (তাগুত) পরিত্যাগ ও অস্বীকার করা। এর জন্যই আল্লাহ জীব সৃষ্টি করলেন, নবীগণদের প্রেরণ করলেন, আসমানী কিতাবগুলো নাযিল করলেন এবং আদেশ দিলেন জিহাদ ও শাহাদাতের। এর জন্যই মহান আল্লাহর বান্দা I kqZv‡bi Abmvix‡`i g‡a¨ i‡q‡Q kÎ"Zv Avi Gi Øviv‡B gmwjg RwZ I mwVK wLjvdZ ivó cwZwôZ n‡e|

আল্লাহ তা'য়ালা বলেনঃ ÒAvwg mwó K‡iwQ wRb Ges gvbl‡K GBRb¨ †h, Zviv AvgviB Bev`Z Ki‡e|Ó (miv-hvwiqvZ:56)

এর অর্থ একমাত্র আল্লাহরই ইবাদত করা তিনি আরও বলেনঃ "আল্লাহর ইবাদত করিবাi I Zv¸Z‡K eRb Kievi wb‡`k w`evi Rb¨ Avwg †Zv c‡Z¨K RvwZi g‡a¨B ivmj cwV‡qwQ------|Ó (miv-bvnj:36)

কোন ইলাহ নাই আল্লাহ ব্যতীত (আক্ষরিক কোন উপাস্য বা ইবাদতের যোগ্য কোন কিছু বা কেউ নাই একমাত্র আল্লাহ ছাড়া), এই wekvm n‡"Q Bmjv‡gi gj ev wfwË|

GB wekv‡mi AeZgv‡b ‡Kvb `vIqv, wRnv`, mvjvZ, mIg, hvKvZ ev n¾ wKQB MnY‡hvM¨ n‡e bv| †Kvb e¨w³‡KB জাহান্নামের আগুন থেকে বাচাঁনো যাবে না যদি না সে এই ভিত্তির প্রতি ঈমান না এনে থাকে। কারণ এটাই মহান আল্লাহর পক্ষ থেকে Zvi ev›`v‡`i cwZ Av‡`kKZ Aj•Nbxq wfwË| GB wfwËi AeZgv‡b Øxb-Bmjv‡gi Ab¨vb¨ ¯¤¸‡jv †Kvb e¨w³‡K Rvnvbv‡gi আগুন হতে নিরাপদে রাখার জন্য যথেষ্ট নয়। মহান আল্লাহ বলেনঃ Ò----যে তাগুতকে অস্বীকার করবে এবং আল্লাহে ঈমান আনবে সে এমন এক মযবুত হাতল ধরবে যা কখনও ভাঙ্গবে না। আল্লাহ সর্বশ্রোতা, প্রজ্ঞাময়।" (miv-evKvi:256)

gnvb আল্লাহ আরও বলেনঃ "যারা ত্বগুতের ইবাদত হতে দূরে থাকে এবং আল্লাহর অভিমূখী হয়, তাদের জন্য আছে সুসংবাদ। AZGe mmsev` `vI Avgvi ev›`v‡`i‡K|Ó (miv-hgvi:17)

লক্ষ্য করুন কেমন করে আল্লাহ তা'আলা তাঁর নিজের প্রতি ঈমান আনার পূর্বে সকল (মিথ্যা) উপাস্যদের অস্বীকার ও অবিশ্বাস Kivi K_v e‡j‡Qb, †hgb wZwb Cgvb Avbq‡bi c‡e Kdi‡K Z¨vM Kivi K_v e‡j‡Qb|

লা ইলাহা ইল্লাল্লাহ- এই শব্দগুলোর মাধ্যমে আল্লাহ তা'আলার একত্ববাদের আদেশ দিয়েছেন যা কিনা ইসলামের এই মজবুত ভিত্তির ¸i"ZcY gjbwZi w`‡K j¶¨ Av‡ivc K‡i| AZGe, mKj (wg_¨v) Dcvm¨‡`i Pig gvত্রায় অস্বীকার করা ব্যতীত মহান আল্লাহর cwZ GKwbó Cgvb †cvIb Kiv hvq bv|

`p wbivcËvi GB wfwË Abmi‡Y †h mKj (wg_¨v) Dcvm¨‡`i cwZ Awekvm I cZ¨vL¨vb Ki‡Z n‡e Zv ïa cv_i, gwZ, MvQ বা কবরের কাছে সেজদা করা, প্রার্থনা করা বা গাইরুল্লাহর নামে শপথ করার মধ্যে সীমাবদ্ধ bq eis GwU AviI e¨cK GKwU ব্যাপার। যেকোন ধরনের ইবাদত যা আল্লাহ ছাড়া অন্য কারো উদ্দেশ্যে করা হয় এবং সে (আল্লাহ ছাড়া যার ইবাদত করা হয়) যদি GB ai‡bi Bev`Z jv‡fi AvKvO¶v K‡i Z‡e †m ZvM‡Zi Ašf³|

mKj †m"QvPvix hviv Zv‡`i wbR Aw¯‡Zi mxgvj•Nb K‡i Zviv GB (wg_¨v) Dcv‡m¨i Ašf³| †mR`v Kiv, gv_vbZ Kiv, cv_bv Kiv, Kmg KvUv, †Kvievbx Kiv- G meB Bev`‡Zi Ašf³| cYxZ AvBbmg‡ni AvbMZ¨ KivI GK cKv‡ii Bev`Z| মহান আল্লাহ নাসারাদের (খ্রীষ্টান) ব্যাপারে বলেনঃ "তারা আল্লাহ ব্যতীত তাহাদের আলেমগণকে ও দরবেশদেরকে তাদের প্রভুরূ‡c MnY K‡i‡Q Ges gviBqvg-Zbq gmxn‡KI| wKš' Zv‡`i‡K GK Bjv‡ni Bev`Z Kievi Rb¨B Aw`ó Kiv n‡q‡Q| Zviv hv‡K kixK K‡i Zv n‡Z wZwb KZ cweÎ|Ó (miv ZIevn 9:31)

hw`I Zviv Zv‡`i Av‡jg‡`i/aghvRK‡`i mvg‡b wmR`v ev gv_v bZ KiZ bv, wKš' Zv‡`i (Av‡jgiv) nvjvj mgn‡K nvivg Kiv Avi nvivgmgn‡K nvjvj Kiv‡K Zviv (Lvóvbiv) †g‡b wbZ I mg_b KiZ| Avi Zv‡`i GB ¯xKwZ I mg_b Kiv‡K মহান আল্লাহ তাঁর সহিত আরেক রব ও ইলাহ শরীক করা বলে গণ্য করেছেন কারণ প্রণীত আইন সমূহের আনুগত্য করা এক প্রকার ইবাদত এবং এই ইবাদত মহান আল্লাহ ছাড়া অন্যকে দেয়া যাবে না যেহেতু মহান আল্লাহই হচ্ছেন আইন বিধিবদ্ধ করার ক্ষমতার একমাত্র অধিকারী। একারণেই যে ব্যক্তিই আল্লাহর সহিত অন্য আইনদাতা গ্রহণ করবে সেই মুশরিকদের অন¯f³ n‡e| bex (mvt)-Gi h‡M, Bmjv‡gi Abmvix I kqZv‡bi Abmvix‡`i g‡a¨ GKUv giv QvMj wb‡q †h cwZØ›×Zv n‡qwQj Zv Avgv‡`i Rb¨ GKwU cgvY mi|c| gkwiKiv gmjgvb‡`i D×× Ki‡Z Pwj"Qj †h GKUv R‡enKZ QvMj I †h QvMj wbR †_‡K gvivi †M‡Q, এই দুটোর মধ্যে কোন পার্থক্য নেই। তারা দাবি করছিল এই যে মৃত ছাগলটিকে আল্লাহই জবেহ করেছেন। এই পরিপ্রেক্ষিতে মহান আল্লাহ তাঁর বিধান নাwhj Ki‡jbt

Ò‡Zvgiv cKvk¨ I c"Qb cvc eRb Ki; hviv cvc K‡i Zv‡`i‡K AwP‡iB Zv‡`i cv‡ci mgywPZ kvw¯— †`Iqv n‡e|Ó(miv-AvbAvg:120)[1]

তাই 'উপাস্য' শব্দটি গঠিত হয়েছে একজন যে নিজেকে মনে করে আইন প্রণয়নকারী/ বিধানদাতা আল্লাহর পাশে শাসনকর্তা একজন **†h msm‡`i cwZwbwa** যে আইনপ্রণয়নকারীর ক্ষমতায় থাকে, অথবা একজন লোক যে সীমা অতিক্রম করল। আল্লাহ মানুষকে সৃষ্টি **K‡i‡Q GKRb `vm wnmv‡e Ges Zvi weavb †g‡b Pjvi Rb¨, wKš‘** মানুষ তা মানল না এবং সীমা অতিক্রম করল এবং বিধানদাতা হিসেবে অংশী স্থাপন করল আল্লাহর সাথে, যার ব্যাপাওে আল্লাহ ছাড়া অন্য **Kv‡iv AwaKvi †bB| †KD hw` †mB mxgv j•Nb K‡i Zvn‡j †m wb‡R‡K GKRb weavb`vZv fvej Ges †m wb‡R‡K Zv‡`i g‡a¨ Aš—f³ Kij| Zvi Bmjvg Ges GKCkiev`** (আল্লাহকে এক মানা) গ্রহণযোগ্য হবেনা। যতক্ষণ পর্যন্ **†m Zvi Av‡Mi KKvh (hv †m K‡i‡Q) Z¨vM bv K‡i Ges †Póv K‡i|** আল্লাহর দাসদের জন্য আল্লাহ বলেছেনঃ

ÒZwg wK Zvnw`M‡K †`L bvB hvnviv `vwe K‡i ‡h, †Zvgvi cwZ hvnv AeZxY nBqv‡Q Ges †Zvgvi c‡e hvnv AeZxY nBqv‡Q Zvnv‡Z Zvnviv wekvm K‡i, A\_P Zvnviv Z¸‡Zi Kv‡Q wePvicv\_x nB‡Z Pvq, hw`I Dnv cZ¨vL¨vb Kivi Rb¨ Zvnw`M‡K wb‡`k †`Iqv nBqv‡Q Ges kqZvb Zvnw`M‡K fxlYfv‡e c_åó Kwi‡Z Pvq?Ó (miv-wbmv:60)

gRwn` (int) e‡j‡Qbt ÒZv¸Z nj gvbl I"cx GK kqZvb hv‡`i Kv‡Q gvbl Av‡m wePvi cvIqvi Rb¨ Ges gvbliv Zv‡`i AbmiY K‡i|Ó

kvqLj Bmjvg Beb ZvBwgq¨vn (in:) e‡j‡Qb:ÒG Kvi‡Y †h wKbv wePvi K‡i †KviAv‡bi ûKg Qvov Zviv Zv¸Z|Ó (gvRgÔAvj dvZvIqv-28LÛ, 201ct)

ইবন আল কাইয়্যুম বলেছেন: "তাগুত হল সীমাজ্ঞনকারী। যদিও কিনা সে ইবাদত করে, আল্লাহর আদেশ মেনে চলে। তাই সমাজের মধ্যে তাগুত সেই ব্যক্তি যাকে সমাজের লোকেরা আল্লাহ এবং তাঁর রাসূলের (সাঃ) পাশে বিচারক হিসেবে স্থান দেয়, অথবা আল্লাহ ব্যতীত, তার ইবাদত করে অথবা আল্লাহর নির্দেশনা উপেক্ষা কওে, তার অনুসরণ করে অথবা জ্ঞান ছাড়া আল্লাহর অবাধ্য হয়ে তার **AvbMZ¨ K‡i|Ó wZwb Av‡iv e‡j‡Qb-** "আল্লাহর রাসূলগণ (আঃ) যে বিধান নিয়ে এসেছেন সেই অনুযায়ী যারা বিচার করেনা অথবা **†mB weav‡bi Kv‡Q Zv‡`i wePvi wb‡q hvqbv ZvivB cKZc‡¶, Ab¨ Dcv‡m¨i Bev`Z Ki‡Q|Ó (BÔjvg Avj-gIqvKxÔqxb-c_g LÛ-50ct)**

Avqv‡Z ewYZ m`p nvZj AvK‡o ivLvi Rb¨ I Rvnvbv‡gi Av¸b †\_‡K te‡P \_vKvi Rb¨, cZ¨K ZvInx`ev`x e¨w³i †h mKj mgKvjxb Dcvm¨ I Zv‡`i Abmvix‡`i Aek¨B A¯xKvi Ki‡Z n‡e, Zviv nj †mB me ¶Y¯vqx gvbe iwPZ AvB‡bi †`e-দেবী রূপী শাসক ও আইনপ্রণয়নকারী। আল্লাহ তা'আলা বলেনঃ **ÒZv†`i wK Ggb KZK¸wj †`eZv Av‡Q hvnviv Bnv‡`i Rb¨** বিধান দিয়েছে এমন দীনের, যাহার অনুমতি আল্লাহ দেন নাই? ফয়সালার ঘোষণা না থাকিলে ইহাদের নিশ্চqB **hwjg‡`i Rb¨ iwnqv‡Q ggš` kw¯|Ó [miv 42:21]**

gvbl AvR Gme AvBb c‡YZv‡`i †g‡b wb‡q‡Q Ges Zv‡`i weavbmgn‡K Gme ¯vbxq, cv‡`wkK I AvšRwZK msm`mg‡ni AwaKvi I ¯vfweK ^ewkó¨i‡c ¯xKwZ w`‡q‡Q| Zv‡`i AvBb I msweav‡bi w`‡K ZvKv‡jB G wel‡qwU ¯úó nq Ges Zviv GwU e‡Sk‡bB K‡i _v‡K|[2]

GBfv‡e, Zviv †mB mKj e¨w³i Rb¨ Dcvm¨ ¯i/c n‡q †M‡Q hviv Zv‡`i AvB‡bi AvbMZ¨ K‡i Ges AbmiY K‡i A\_ev** তাদের এই শিরক ও কুফরী কার্যকলাপে সম্মতি প্রদান করে, ঠিক যেভাবে আল্লাহ তা'আলা খ্রীষ্টানদের ব্যাপারে বলেছেন যখন তারা **Zv‡`i cv`x I `i‡ek‡`i AbmiY KiZ| Z‡e eZgv‡b hviv MYZ‡š¿i Abmvix (I cYqbKvix), Zviv I‡`i (†mKvjxb Lxóvb‡`i ) †P‡q I AwaK Lvivc Ges AcweÎ; KviY, †mB cv`xiv †hme KvhKjvc KiZ Zviv †m¸‡jv‡K weavb e¨e¯v ev AvBb wn‡m‡e cwZwôZ K‡i w`Z bv Ges Zviv msweavbI ^Zwi KiZ bv| hviv Zv‡`i ‡mB Rxeb e¨e¯v‡K ¯xKwZ w`Z bv ev AbmiY KiZ bv Zv‡`i‡K Zviv kw¯ও দিত না। আর বর্তমান তাগুতদের মত তারা তাদের রীতি রেওয়াজকে আল্লাহর কিতাবের **mv‡_ mgšq Kivi †Póv KiZ bv|**

আপনারা যদি এই বিষয়গুলো উপলব্ধি করতে পারেন তাহলে অবশ্যই জানবেন যে আল্লাহ**i i¾‡K w¯i `pZvi mv‡_ AvK‡o _vKv Ges mKj cKvi gvbe iwPZ weavb A_ev gvbe-‰Zix Dcvm¨‡K A¯xKvi KivB nj Bmjv‡gi m‡ev"P Pov|**

---

[1] The Noble Quran**-G gnvb¤^` gnmb Lvb GB Avqv‡Zi fvev\_ wjL‡Z wM‡q e¨vL¨vq e‡j‡QbtÒKviY Zviv (kqZvb I Zv‡`i eÜiv) †Zvgv‡`i Rb¨** সে সব খাদ্য খাওয়াকে বৈধ করে দিয়েছিল যে সব খেতে আল্লাহ নিষেধ করে দিয়েছিলেন, আর তোমরা সে সব খাদ্য গ্রহন করা বৈধ মনে করার মাধ্যমে তাদের অনুগত্য করতে, এবং এই আনুগত্য দ্বারা তোমরা তাদের ইবাদত করতে; আর আল্লাহ **Qvov Ab¨ Kvi I Bev`Z Kiv n‡"Q wkiK|**

[2] **K‡q‡Zi msweav‡bi 51 avivi Abhvqx ÒheivR I msm` cwil` KZK AvBb cbqb wefvM cwiPvjZ|Ó RWv‡bi msweav‡bi 25 avivi Abmv‡i, ÒivRv I msm‡`i e¨w³e‡Mi Dci AvBb cbqbKvix cwil` KZZkxj| wgk‡ii msweav‡bi 86 avivi Abhvqx,Ò msm` cwil‡`i AvBb cbqb wefv‡Mi Dci ¶gZvkxj|**